मेरे साहित्यिक आलेख

भाग-1

विजय शर्मा

मेरे साहित्यिक आलेख

भाग – 1

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मार्च, 2026

© विजय शर्मा

अनुक्रम

शहर अपनी दुनिया	3
बसाया अपना जहाँ	24
साहित्यिक विश्वनगर	47
परदा ना उठाओ	65
नाटक अनजानी दुनिया के	85
कथा पर पश्चिमी असर	98
पुस्तकें संभालें	108
मैन इन गॉड’स लैंड	115
ज़ोला और हिंसा	133
लिखना पागलपन है	144

शहर अपनी दुनिया

मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और भँवरे जगह-जगह जाते हैं, तरह-तरह के फ़ूलों पर मँडराते हैं और रस संग्रह करके मधु बनाते हैं। इसी तरह कहा जाता है, ज्ञान इकट्ठा करना हो, तो घाट-घाट का पानी पीना होगा। माना जाता है, जो व्यक्ति जितना ज्यादा भ्रमण करता है, उसका ज्ञान उतना बढ़ता है। 'चरन वई मधु बिंधते।' घूमने से मधु मिलता है। चलते रहने से उद्देश्य की प्राप्ति होती है। एक समय था, जब आज की तरह आवागमन की सुविधा और साधन उपलब्ध न थे। तब घूमना आसान न था। लोग अक्सर पैदल चलते थे और आवश्यकता पड़ने पर घोड़ा, बैलगाड़ी, नाव का प्रयोग करते थे। यूरोप में भ्रमण को खूब बढ़ावा दिया जाता था। एक समय यूरोप में माना जाता था, जब तक व्यक्ति विश्व भ्रमण नहीं कर लेता उसकी शिक्षा पूर्ण नहीं मानी जाएगी। यह बात दीगर है, उस समय शिक्षा सबको उपलब्ध न थी। कुछ गिने-चुने लोग ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। कुछ लोग भ्रमण करते थे। हमारे यहाँ पहले खूब यात्राएँ होती थीं। फ़िर समय बदला, जब माना जाने लगा कि समुद्र पार करने से धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। बस फ़िर क्या था, समुद्र यात्रा वर्जित हो गई। सब लोग नियम नहीं मानते हैं, कुछ नियम तोड़ने को पैदा होते हैं। कुछ लोग नियम तोड़ कर विदेश यात्रा करते, बस उन्हें लौट कर प्रायश्चित करना पड़ता। भारत में ऐसे भी लोग हुए हैं, जो जिंदगी भर घूमते रहे और उनका नाम पड़ गया घुमक्कड़। घुमक्कड़ स्वामी राहुल सांकृत्यायन ऐसे ही व्यक्ति थे। वे जिंदगी भर घूमते रहे और इस घुमक्कड़ी से उन्होंने जो पाया वह सर्वविदित है। माना

जाता है, लेखक के लिए घूमना अत्यंत आवश्यक है। जब वह विभिन्न स्थानों पर जाता है, तब वहाँ के लोगों के जीवन रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, भाषा-बोली, सभ्यता-संस्कृति से परिचित होता है, जो उसके लिखने की प्रेरणा और सामग्री बनता है।

देखना यह है, क्या यह नियम सर्वमान्य है या इसके अपवाद भी हैं? असल बात विस्तार की नहीं वरन गहराई की होती है। लेखन के लिए संवेदनशील होना, जीवन को उसकी समग्रता में जीना-आँकना आवश्यक है। यह एक स्थान पर रहते हुए भी संभव है। वरना लोग सारी जिंदगी घूमते हुए जिंदगी को इतने सतही तरीके से, इतना ऊपर-ऊपर जीते हैं, जिंदगी समाप्त हो जाती है, उन्हें पता ही नहीं चलता है कि यह क्या है। क्या जो लेखक अपने स्थान को नहीं छोड़ते हैं, वे उच्च कोटि का साहित्य नहीं रच सकते हैं? नहीं रचते हैं? या उनका साहित्य मानवता की संवेदनाओं से अछूता रहता है? क्या वे अपने लेखन में संकुचित विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं? अथवा उनका साहित्य भी मानवता के हित की बात कहता है? क्या वे अन्य लोगों के मन की बात नहीं कहते हैं? क्या ऐसे लेखक सम्मान के अधिकारी नहीं होते हैं? इस आलेख में कुछ ऐसे ही लेखकों को जानने-समझने का प्रयास किया गया है जिन्होंने अपना जन्म स्थान नहीं छोड़ा। जो एक ही स्थान पर रहते हुए रचना कर्म करते रहे। लेकिन जिन्होंने विश्व साहित्य में अपना स्थान बनाया। इतना ही नहीं इन लेखकों ने उच्च कोटि की रचनाएँ विश्व को दीं। उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया।

लोगों की रूचि भिन्न-भिन्न होती है। कुछ लोगों को घूमना-फ़िरना बहुत अच्छा लगता है, वे हर समय घर से निकल पड़ने को तत्पर रहते हैं। दूसरी ओर ऐसे भी लोग है, जिन्हें घर छोड़ने के नाम से बुखार आ जाता है। वे जब तक अत्यावश्यक न हो अपने घर से बाहर निकलना पसंद नहीं करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें घूमने का खूब शौक होता है। लेकिन किसी-न-किसी कारण से उनकी इच्छा पूरी नहीं हो पाती है। कभी निजी परेशानियाँ, कभी आर्थिक कठिनाइयाँ कभी कुछ और। कुछ ओर ऐसे भी लोग हैं, जिनके साथ कोई परेशानी, कोई कठिनाई नहीं होती है। वे आर्थिक रूप से भी संपन्न होते हैं, परंतु वे अपने स्थान से बाहर निकलने की आवश्यकता अनुभव नहीं करते हैं। ऐसे रचनाकार भी हुए हैं, जिन्होंने अपना शहर कभी नहीं छोड़ा लेकिन इससे उनके लेखन की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आई। उनका साहित्य, उनका दृष्टिकोण संकुचित नहीं हुआ। बहुत सारे ऐसे रचनाकार हुए हैं, जिन्होंने अपना शहर नहीं छोड़ा। आलेख की सीमा देखते हुए मात्र कुछ रचनाकारों की ही चर्चा यहाँ की जा रही है।

लेखकों के अपने स्थान से बाहर न जाने के बहुत से कारण हो सकते हैं। एक समय था, जब यातायात के साधनों का अभाव था। पर आज ऐसी बात नहीं है। तीव्रतम गति के वाहन उपलब्ध हैं। फ़िर भी कुछ लेखक यात्रा करना पसंद नहीं करते हैं। कभी-कभी अर्थाभाव भी कारण बनता है, कुछ ऐसे लेखक हैं, जिन्हें ऐसी कोई दिक्कत नहीं है, वे आर्थिक रूप से खूब समृद्ध हैं, फ़िर भी अपना शहर नहीं छोड़ना चाहते हैं। जैसे ओरहान पामुक। उनके साथ कोई बंदिश न थी। वे खूब समृद्ध परिवार से आते हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा

भी बहुत भली-भाँति हुई। लेकिन एक दिन सब छोड़-छाड़ कर उन्होंने लेखक बनना तय किया। स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। बरसों-बरस उसमें बैठ कर लिखते रहे। उनकी माँ अक्सर उनसे कहती, 'तुम थोड़े वक्त के लिए बाहर क्यों नहीं निकलते, माहौल बदलने की थोड़ी कोशिश क्यों नहीं करते… सफ़र पर क्यों नहीं चले जाते।' परंतु पामुक ने न केवल अपना शहर इस्ताम्बुल नहीं छोड़ा बल्कि अपनी इमारत 'पामुक अपार्टमेंट्स' तक नहीं छोड़ा। उन्होंने न केवल अपना शहर और इमारत नहीं छोड़ी वरन घर में केवल अपने कमरे की खिड़की से सदा एक ही दृश्य को घूरा और उच्च कोटि की रचनाएँ कीं।

ओरहान पामुक का जन्म 1952 में इस्ताम्बुल में हुआ। इस्ताम्बुल एक प्राचीन शहर है। दो दुनियाओं की मिलन स्थली। यह स्थल पूर्व और पश्चिम की सभ्यताओं का संगम है। एक समय यह व्यापार की धड़कन हुआ करता था। खूब जीवंत शहर!। इसे ही पामुक ने अपने अधिकाँश लेखन-कार्य का केंद्र बनाया। वे 22 साल की उम्र तक एक कलाकार बनने का स्वप्न पाल रहे थे। ज्यादातर समय चित्रकारी करते रहते। इस समय तक वे अपने पिता की लाइब्रेरी की सारी किताबों से परिचित हो चुके थे, भले ही सबको पूरा पढ़ा न हो। वे देख रहे थे, इन किताबों में वे या उनके जैसे लोग, उनकी सभ्यता-संस्कृति कहीं नहीं थी। दुनिया का केंद्र तुर्की न था। यह बात उन्हें गहरे कचोटने लगी। जो साहित्य वे पढ़ रहे थे, उसके केंद्र में ज्यादा समृद्ध, ज्यादा उत्तेजक जीवन था। कुछ बाद में उन्हें यह भी पता चला कि दुनिया के बहुत सारे अन्य देश और उनके लोगों का जीवन, उनकी सभ्यता-संस्कृति विश्व साहित्य का हिस्सा है ही नहीं है। वे विश्व साहित्य के केंद्र में नहीं हैं, कई बार हाशिए पर भी नहीं।

पामुक पश्चिमी और यूरोपीय साहित्य की बात कर रहे हैं। तब उनके लिए पढ़ने का अर्थ था, एक दूसरी दूर की, भिन्न और अजनबी दुनिया में विचरण करना। तुर्की जो पूर्व और पश्चिम की मिलन स्थली है, वह पश्चिम के साहित्य का केंद्र तो दूर उसका हिस्सा भी न थी। उस साहित्य में उसका प्रवेश न था।

पामुक ने निश्चय किया, वे तुर्की के इतिहास, भूगोल, समाज, सभ्यता-संस्कृति को साहित्य का केंद्र बनाएँगे। इसके लिए उन्होंने निरंतर प्रयास किया। स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिखना प्रारंभ कर दिया। तब से लेकर आज तक उन्होंने लिखने के अलावा कोई और काम नहीं किया है। उनकी मेहनत और लगन का नतीजा हुआ, 'स्नो', 'माई नेम इज रेड', 'इस्ताम्बुल : मेमोरीज ऑफ़ ए सिटी', 'द ब्लैक बुक', 'केवेडेट बे एंड हिज संस', 'द व्हाइट कैसेल', 'द साइलेंस हाउस', 'द न्यू लाइफ़', 'नाइट्स ऑफ़ प्लेग' आदि। अपनी किताब 'इस्ताम्बुल : मेमोरीज ऑफ़ ए सिटी' में पामुक स्वयं कहते हैं: 'मैंने इस्ताम्बुल कभी नहीं छोड़ा – अपने बचपन के घरों, गलियों और आस-पड़ौस को कभी नहीं छोड़ा। हालाँकि समय-समय पर मैं दूसरे जिलों में रहा हूँ। पर फ़िर पामुक अपार्टमेंट्स में लौट आया हूँ। जहाँ मेरे पहले फ़ोटोग्राफ़्स लिए गए थे, जहाँ मेरी माँ ने मुझे पहली बार बाँहों में उठाया था।' (बाद में अपनी किताबों के प्रमोशन एवं शिक्षण के लिए कई स्थानों पर गए।) लेकिन इस्ताम्बुल का भाग्य उनका भाग्य है। वे शहर से बहुत गहरे जुड़े हुए हैं क्योंकि आज जो भी वे हैं वैसा उन्हें इसी शहर ने बनाया है। उन्होंने इस्ताम्बुल को साहित्य का केंद्र बना दिया, इस केंद्र में इतना आकर्षण था, नोबेल समिति का ध्यान उनकी ओर गया और 2006 का नोबेल